गलघोंटू

हेमोरेजिकसेप्टिसीमिया (H.S.)

यह रोग घुर्रका के नाम से भी जाना जाता है।

कारण

यह जीवाणु जनित, छूतदार संक्रामक रोग है। यह रोग वातावरण में अधिक नमी वाले स्थानों पर होता है। प्रायः यह रोग वर्षा और शीत ऋतु में होता है।

रोग का फैलाव

- रोगी पशु के जुठे चारे, दाने एवं पानी के सेवन से
- रोगी पशु के बिछावन के सम्पर्क में आने से

लक्षण

- 105-106 डिग्री फॉरेनहाइट तक तेज बुखार, आंखें लाल एवं सूजी हुई, आंख-नाक से स्राव, मुँह से लार का गिरना
- गर्दन और आगे की टांगों के बीच सूजन
- सांस लेते समय तकलीफ, घुर्र-घुर्र की आवाज एवं दम घुटने से मृत्यु

बचाव व उपचार

छः माह से अधिक की आयु वाले पशुओं में प्रतिवर्ष टीकाकरण करायें

- स्वस्थ पशु को चारा, दाना, पानी आदि रोगी पशु से पहले देवें
- रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें
- प्रतिवर्ष मानसून पूर्व गलघोंटू रोग का टीका अवश्य लगवाएँ
- शीत ऋतु में रोग सम्भावित क्षेत्रों में पुनः टीकाकरण अवश्य करायें
- पशु आवास नमी रहित रखें
- टीकाकरण के लिये नजदीकी पशु चिकित्सा संस्था में सम्पर्क करें ।

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031